RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

भारतीय और पाश्चात्य कवियों में ''काव्य लक्षण'' के सामंजस्य जनिक विशेषताओं का समन्वय

डॉ. पी. बी. महानंदे

जनता महाविद्यालय चंद्रपूर

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 April 2019

Keywords
सामंजस्य – संगति, औचित्य, अनूकुलता
समन्वय – संयोग, संबध्द फल
ग्राहय – ग्रहण करना, आत्मसात
अंलकारमयी – रचनागत शब्द योजना
यथार्थवाद – सत्य, प्रकृत, उचित.

ABSTRACT

आदि काल से 'काव्य' को जानने–पहचानने का प्रयास विद्वानों द्वारा किया जाता रहा है, और आज भी यह प्रयास पूरी गति से चल रहा है। इस समस्त प्रयास का विवेचन करने से पूर्व यदि 'काव्य' शब्द से ही जान–पहचान प्रारंभ की जाय तो अनावश्यक न होगा।

प्राचीन साहित्य में जो महत्व ईश्वर–भक्ति को मिला था, लगभग वही महत्व स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में भारतीय कविता में राष्ट्रिय भावना सभी युग के साहित्यकार के हदय में किसी न किसी रूप में व्याप्त रही है। वैदिक ऋषियों ने इसे ''सर्वे सन्तु सुखिन : सर्वे सन्तु निरामय' कहकर एक प्रकार से विस्तृत राष्ट्रिय भावना का परिचय दिया था। राष्ट्रियता की भावना का संबंध राजनीतिक गतिविधीयों से चालित प्रतित होता है, किंतु युगानुकूल परिस्थिती के अनुरूप इसका स्वरूप परिवर्तित होता रहा है। और भविष्य में भी इसमें परिवर्तन की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। प्राचीन एंव मध्यकालीन कवियों की राष्ट्रियता को निम्न श्रेणी का बताकर उसे राष्ट्र भक्ति न कहकर राज भक्ति की संज्ञा दी गई है। इस वर्ग के विचारकों का अभिमत है कि चंदबरदायी, भूषण आदि ने संकुचित राष्ट्रियता का परिचय दिया है। कभी–कभी उन्हें साम्प्रदायिकता का पोषक तक कह दिया है। यदि हम अपनी प्रगतिवादी विचारधारा के प्रकाश में चंद और भूषण को संकुचित दृष्टि का कवि कहते है, तो आज से सौ, दो सौ वर्ष बाद या जब कभी विश्व सरकार जैसी संस्था की कल्पना साकार हो जाएगी तो उस काल के विचारक आज की हमारी राष्ट्र भक्ति में संकिर्णता का दर्शन करेंगे। अतः हमें अपनी दृष्टि को ही सर्वत्र आरोपित न कर तत्कालीन मान्यताओं के परिप्रेक्ष्य में विचार करना होगा।

आधुनिक अर्थो में राष्ट्रिय भावना का उन्मेश हिंदी साहित्य में आधुनिक काल से हुआ है। भारतेंदु को हिंदी का प्रथम राष्ट्रवादी कवि माना जा सकता है।

प्रस्तावना

आधुनिक युग का प्रारंभ सन 1850 माना जाता है। यह भारतेंदु युग था। आधुनिक काल का प्रथम–चरण भारतेंदु से ही संबंधित है। समय के अनुसार साहित्य में भी परिवर्तन होता रहता। सन 1857 की जन जागृति से जनता को रीतिकालीन कविता ग्राहय न थी। सौंदर्यपूर्ण तथा अलंकारमयी कविता धीरे–धीरे अपना प्रभाव खोने लगी और उसके स्थान पर नवीन चेतना युक्त, यथार्थवाद की सहायता लेकर साहित्य में नवीन कविता का सृजन होने लगा। क्योंकि प्राचीन रूढियाँ जनता की करूण दशा का चित्रण करती थी। भारतेंदु नें कविता में प्राचीन रूढियों को हटाया और नवीनता का संचार किया। अपनी कविता में भारत के अतीत गौरव के सुंदर चित्र खिंचकर आधुनिक जनता को भारत के गौरव व पूर्ण इतिहास की ओर उन्मुख किया। उन्होंने अपनी कविता के द्वारा समाज की कुरितियों को हटाने का प्रयत्न किया। इस प्रकार भारतेंदु ने साहित्य में नव जीवन का संचार किया।

आधुनिक हिंदी साहित्य भारतीय समाज के एक सर्वथा नए वर्ग का साहित्य है जो नवीन शासन प्रणाली और आर्थिक प्रणाली के फलस्वरूप भारतीय रंगमंच पर आया। इसका प्रधान कारण यह है कि पश्चिमी सभ्यता के संपर्क में आने से राजनितिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक क्षेत्र में भारतीय दृष्टिकोण बदल रहा है। और इसी बदलते हुए दृष्टिकोण से प्रेरित होकर आधुनिक हिंदी साहित्य का विकास प्रारंभ हुआ, व नव जागरण से उत्पन्न विचारों के प्रभाव से हमारे साहित्य ने रूढ़ि के बंधन को तोडकर एक नए युग में प्रवेश किया।

हिंदी के आचार्यो की भी एक विस्तृत परंपरा रही है। इसका प्रारंभ रीतिकालीन आचार्यो से होकर आज तक के आचार्यो तक सतत चला आ रहा है। काव्य–शास्त्रों के आचार्यो ने काव्य की कई परिभाषा दी है।

- **कवि परमेश्वर** के अनुसार ब्रम्हा, सर्वज्ञ एवं सब विषयों का वर्णन करने वाला होता है। कवि का स्थान श्रेष्ठतम हैं। जिस व्यक्ति की सृजनात्मिकता शक्ति सर्वोज्ञान से मण्डित है और उसमे अभिव्यक्ति की क्षमता है उसे कवि कहेंगे। इसी कवि शब्द से 'काव्य' शब्द बना है।

- **संस्कृत कवि रूद्रट** के अनुसार शब्द अर्थ को 'काव्य' कहा है।

- **कवि मम्मट** के अनुसार शब्द और अर्थ का समन्वित रूप जो दोष रहित हो, गुण अलंकार से मुक्त हो तथा कही अलंकार स्पष्ट न भी हो तो 'काव्य' होता है। अतः भिन्न–भिन्न काव्य–कृतियों का समष्टि संग्रह ही साहित्य है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

- **कवि भामह** के अनुसार शब्द और अर्थ से मुक्त रचना को 'काव्य' कहते है। 'शब्दालंकार' और 'अर्थालंकार' दोनों काव्य में 'इष्ट' है।

- **कविप्रेमस्वरूप गुप्त** के अनुसार इष्टार्थ शब्द का अर्थ 'पदावली' को काव्य कहते है।

- **डॉ. नगेन्द्र** के अनुसार शब्द और अर्थ का वह समन्वित रूप जो दोष रहित हो, गुण–अलंकार से युक्त हो, तथा कहीं अलंकार स्पष्ट भी हो, तो काव्य होता है। हिंदी जगत में कई विद्वानों ने अपनी अभिव्यक्ति का परिचय अलग–अलग ढंग से प्रस्तुत किया है।

- **तुलसीदास** कहते है कि
  'स्वान्त सुखाय तुलसी रघुनाथ गांथा,
  भाषा निबंन्धमति मंजुल मातनोति ''

गोस्वामी तुलसीदास काव्य का प्रयोजन 'स्वान्त' 'सुखाय' बतलाते हैं। पर उनका 'स्वांतः सुखाय' लोक मांगल्य में परिणत हो गया है।

- **जायसी** ने अपने मत का प्रतिपादन करते हुए कहा कि –
  ''भय प्रसन्न ओहि हजरत ख्वाजे लिए गिरई जहाँ सैयद राजै''
  ओहि सेवत में पाई, करनी उधरी जीभ, प्रेम कवि वरनी ''

रीतीकालीन सभी आचार्य, आचार्य मम्मट से प्रभावित है इसलिए इनके विवेचनों में मौलिकता और गंभीरता का अभाव है। आधुनिक हिंदी के आचार्यो, कवियों एंव विचारकों ने संस्कृत काव्य शास्त्र तथा रीतीकालीन से प्रभावित न होकर युगीन काव्य चेतना के प्रति निष्ठा प्रकट की, इसिलिए इनके चिंतन में मौलिकता आ गई है।

- **कवि मैथिली शरण गुप्त**ा के अनुसार केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
  उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।

- **कवि जयशंकर प्रसाद** के अनुसार संसार को काव्य से दो तरह के लाभ पहुँचते है।
  मनोरंजन और शिक्षा।

- **कवि सुमित्रानंदन पंत** के अनुसार एक विकसित कलाकार के व्यक्तित्व में स्वांन्त और बहुजन में आपस में वही संबंध रहता है, जो गुण और राशि में और एक के बिना दुसरा अधूरा है।

- **कवित्रि महादेवी वर्मा** के अनुसार साहित्य का उद्देश्य समाज के अनुशासन के बाहर स्वच्छंद मानव स्वभाव में उसकी मुक्ति को अक्षण्य रखते हुए, समाज के लिए अनुकूलता उत्पन्न करना है।

- **आचार्य द्विवेदी** के अनुसार ''ज्ञान और मनोरंजन '' को काव्य प्रयोजन माना है।

- **संस्कृत आचार्य दण्डी** के अनुसार ''यश और ज्ञान'' को काव्य प्रयोजन माना है।

- **अयोध्यासिंह उपाध्याय ''हरिऔध''** ' के अनुसार 'ज्ञान और आनंद'' को काव्य माना है।

- **जयशंकर प्रसाद** के अनुसार मनोरंजन और शिक्षा को काव्य प्रयोजन माना है।

- **सुमित्रनंदन पंत** के अनुसार ''स्वांत सुख तथा लोकहित'' को काव्य प्रयोजन कहा है।

- **महादेवी वर्मा** के अनुसार मानस हृदय से समाज के लिए अनुकूलता उत्पन्न करना काव्य प्रयोजक माना है।

उपयुक्त विचारों में मौलिकता एंव गांभीर्य दिखाई पडता है। इन विवेचकों ने युगीन आवश्यकताओं और नवीन ''काव्य चेतना'' को ध्यान में रखकर प्रयोजनों का विवेचन किया है।

- **पाश्चात्य विद्वानों के काव्य लक्षण –** पाश्चात्य विद्वानों ने भी काव्य लक्षण के संबंध में पर्याप्त विचार किया है।

संस्कृत के आचार्य भरतमुनि ने नाटक को तीन लोकों की अनुकृति मानकर अनुकरण की महत्ता को स्वीकारा था। ठिक उसी प्रकार युनानी आचार्यो ने भी अनुकरण को ''काव्यकला'' का मौलिक तत्व स्वीकार किया है। यह अनुकरण काव्य में भाषा के माध्यम से व्यक्त होता है।

- **होरेस** – ''कवि और पेंटर'' के कार्य को समान स्वीकार किया है।

- **डेनिस** –"Poetry is an imitation of Nature by aPathetic and numer our speech"

- **वर्डसवर्थ** – ''कविता प्रकृति का अनुकरण है। इस अनुकरण में संदेशात्मक तथा संगीतात्मक'' भाषा ही माध्यम का कार्य करती है।

"Poetry is the anti-thesis of Science, having for its, immediate object

pleasure, not spirit of all knowledge," Poetry we will call musical thought."

- **कॉलरिज** – कविता उत्कट भावनाओं का सहजोद्रेक है। इसकी उत्पत्ति शांति में संचित अनुभूतियों से होती है।

"Poetry, the best words in the best order."

- **विलियमहैजिलिट** – कविता जीवन की वैचारिक व्याख्या है।

"Poetry at bottom a criticism of life"

- **मैथ्यू आर्नाल्ड** – कविता संगीतमय विचार है।

"Poetry is at bottom a criticism of life"

- **प्रो. वित्सिम विल्सन**– कविता महान सत्य की अभिव्यक्ति है।

"Poetry is the intellect coloured to feeling."

पाश्चात्य विद्वानों के उपर्युक्त कथनों से–बुध्दित्व, भावतत्व, कल्पनातत्व और कलातत्व का शैली तत्व को स्वीकृती प्राप्त हुई है। अतः इन्ही चार को काव्य का प्रमुख तत्व स्वीकार है। इनके दो श्रेणी के व्याख्याकार है – एक तो वे है, जो ''काव्य'' को जीवन से अलग करके देखना चाहते है, और दूसरे वे है जो ''काव्य'' को जीवन की अभिव्यक्ति या आलोचना मानते है।

निष्कर्ष

भारतीय आचार्यो के विचारों का निरंतर स्थूल की ओर से सूक्ष्म की ओर विकास होता रहा है। काव्य के शरीर को टटोलते–टटोलते आत्मा से पहचान कर बैठे है, इसिलिए जयशंकर प्रसाद द्वारा काव्य को आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति कह बैठे है। संस्कृत, हिंदी और अँग्रेजी के आचार्यो और कवियों द्वारा बताए काव्य लक्षणों से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है। कि –

* शब्दार्थ काव्य है।
* शब्द ही काव्य है।
* काव्य के लिए छंद अनिवार्य है।

संस्कृत के आचार्य भाहम, वामन, रूद्रट, मम्मट आदि ने 'शब्दार्थ' को काव्य माना है, जबकी दण्डी, विश्वनाथ, जगन्नाथ ने 'शब्द' को ही काव्य माना है।

छायावादी कवियों पर यदि विचार किया जाय तो यहि निष्कर्ष निकलता है, कि इन सबका लक्ष्य एक था। केवल साधन भिन्न थे। साधन की भिन्नता भी ऊपर से दिखाई देती है। अतः इनके साधनों की मूल प्रवृत्ति एक ही रही है।

जैसे – कवि प्रसाद ने ''प्रेम'' को साधन बनाया, कवि सुमित्रानंदन पंत ने ''सौंदर्य'' को, महादेवी वर्मा ने ''साधना'' को और कवि निराला ने ''सामर्थ्य'' शक्ति को।

चारों कवि एक ही लक्ष तक पहुँचते है। इस प्रकार व्यक्ति ''लक्ष्य'' है, और उसके आचरण और आदर्श उस लक्ष्य प्राप्ति के ''साधन'' है। छायावाद के चारों कवियों ने इसी साधन और साध्य का स्वरूप विश्लेषित किया है।

हिंदी साहित्य का छायावादी काव्य भारतीय नव जागरण के समस्त गुणों का वाहक है। अँग्रेजी शासन के साथ वैज्ञानिक ज्ञान की जो लहर देश में आई उसके प्रभाव से इस देश की प्राचीन संस्कृति का नव निर्माण हुआ, क्योंकि प्राचीन की संस्कृति बीच में ही प्रायः लुप्त हो गयी थी। इस नव निर्माण का सबसे अप्रत्याशित परिणाम यह हुआ कि भारतीय सभ्यता संस्कृति बीच में ही प्रायः लुप्त हो गयी थी। इस नव निर्माण का सबसे अप्रत्याशित परिणाम यह हुआ कि भारतीय सभ्यता, संस्कृति विश्व में सर्वश्रेष्ठ घोषित हुई। यह उद्घोषणा भारतीय मनीषियों की सर्वश्रेष्ठ प्रज्ञा का प्रतिफल था। भारत जैसे पराधीन और पिछडा हुआ देश–विश्व–संस्कृति का परिक्षक बने यह अपने आप में जितना संदेहास्पद था उतना ही सत्य भी, यह घटना भारतीय– नवजागरण की अमूल्य निधी है।

संदर्भ सूची

१. रस–मीमांसा – आचार्य रामचंद्र शुक्ला
२. छायावादी काव्य और निराला – डॉ. कुमारी शान्ति श्रीवास्तव
३. हिंदी काव्यादर्श – रणवीर सिंह
४. रोमांटिक युगीन अँग्रेजी कविता और छायावाद – डॉ. कृष्णमुरारी मिश्र
५. प्रसाद का मुक्तक काव्य – डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना

RRIJM 2015, All Rights Reserved